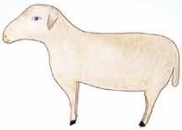

पृथ्वी लोक को अनंत पिता का दूर संवेदनशील संदेश

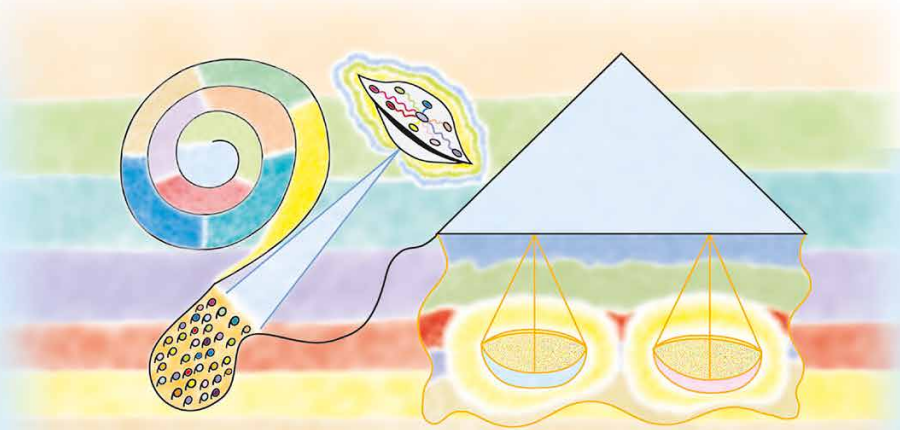

सेलेस्टियल साइन्स

अल्फ़ा और ओमेगा

पृथ्वी के सभी निवासियों, भगवान की खुशी से स्तुति करो.

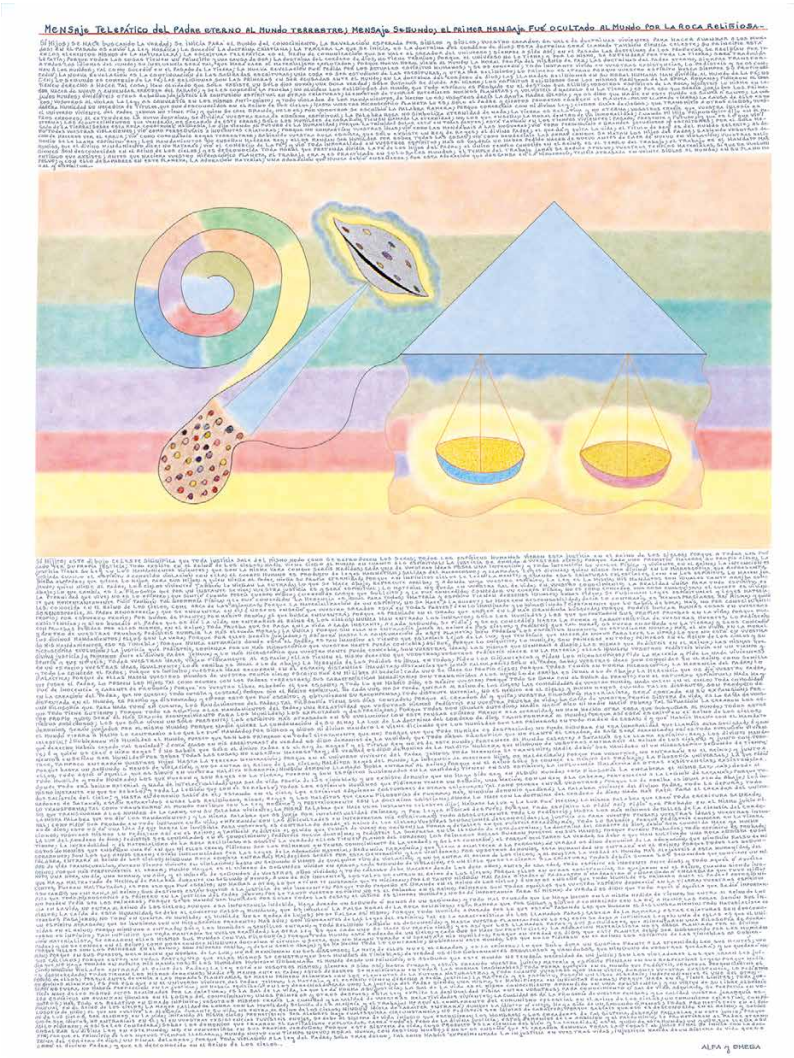

अल्फा और ओमेगा, विशाल टेलीपाथिक इंजील के लेखक हैं

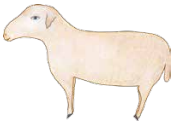

पृथ्वी लोक को अनंत पिता का दूर संवेदनशील संदेश; दूसरा संदेश; पहला संदेश दुनिया से धार्मिक शीला द्वारा छिपा हुआ था.-

हाँ बच्चों; हर कोई सत्य की खोज में जन्म लेता है; उसका प्रारंभ ज्ञान की दुनिया के लिए होता है, रहस्योद्घाटन कई सदियों तक रुका रहा; तुम्हारा निर्माता मौजूदा सिद्धांतों का इस्तमाल करता है ताकि दुनिया आगे बढ़ सके; भूतकाल में उसने मोसैक लॉ (Mosaic Law) भेजा; तत्पश्चात क्रिस्चियन डोक्टराईन का आवाहन हुआ; और अब तीसरा, जो की शुरू होने जा रहा है, वो है धी डोक्टराईन ऑफ़ धी

लेम्ब ऑफ़ गॉड; इस सद्धिांत को सेलेस्टयिल साइन्स भी कहा जाएगा; इसका उद्गम प्रकृतकि उन्हीं मूल तत्वों से है; ब्रह्माण्ड के नरि्माता संवाद के लिए दूर संवेदनशील शास्त्रों का प्रयोग करते हैं; हमेशा से ऐसा ही होते आ रहा है; भूतकाल में पैगम्बरों के सद्धिांत दूर संवेदनशील रूप से ही प्राप्त कयि गए थे; हलाकि हर चीज़ के उद्गमस्थान और उसके अस्तत्वि का कारण होता है; धी डोक्टराईन ऑफ़ धी लेम्ब ऑफ़ गॉड का कोई अंत नहीं है; क्योंकि ब्रह्माण्ड के पास वह नहीं है; और इसी कारण-वश दुनयिा भर में इसका फैलाव होगा; दुनयिा की हर भाषा में इसका अनुवाद होगा; यह इतना प्रभावशाली होगा जसिसे शोषक भौतकिता का नाश होगा; क्यूकी एक नया सदाचार दुनयिा में आ रहा है; सदाचार जो अमन की सहस्राब्धि से संबंधति

है; अनंत पति के सद्धिांत हमेशा दुनयि
में बदलाव लाते हैं; ठीक उसी तरह जैसा की
भूतकाल में होता आया है; नए रहस्योद्घाटन
का नविेदन मौजूदा इंसानी आत्माओं द्वारा
कयि गया था; और वह तुम्हे दयि गया है;
तुम्हारे अस्तत्वि के हर एक पल का नविेदन
कयि गया था, और वह तुम्हे दयि गया; नया
रहस्योद्घाटन पवत्रि ग्रंथों का ही नरिंतर
भाग है; ग्रंथों का अध्यन करना एक चीज़
है और धार्मकि होना एक चीज़; पहली चीज़
अनंत है क्युकी तुम्हारी आत्मा हमेशा अपने
उद्गम की तलाश में रहती है; दूसरी, आस्था
का व्यापार है; दुनयि में सब से पहले धर्मो
की ही अभयिुक्त होती है; धी डोक्टराईन ऑफ़
धी लेम्ब ऑफ़ गॉड में; तथाकथति धर्मोने
आस्था की दुनयि को बाँट दयि है; उन्हें ऐसा
करने का कोई अधकिार नहीं है; वे यह भूल गए

हैं की ईश्वर सर्फि एक है; एकमात्र सत्य; केवल शैतान ही वभिाजन करता है और खुद भी वभिाजति हो जाता है; धार्मकि आत्माएं रोमन काल के फ़ारसिीयों की है; उन्होंने ईश्वर से यह नविदन कयिा की वे पुनः जन्म लेकर भूतकाल में हुई चूकों को सुधारें; और इश्वर ने उनके नविदन को स्वीकृत कयिा; दुनयिा के सारे धार्मकि व्यक्ति यह न भूलें की हर एक आत्मा से अपने प्रारब्ध का परीक्षण माँगा जाता है; तुम शीलाओं की आत्माओ ने भी दूरस्थ दुनयिाओं में यही कयिा था; तुमने दुसरे समुदायों का वभिाजन कयिा; तुमने दूसरी योनी के जीवों को आध्यात्मकि वभि्रांतयिों में रखा; तुमने कई ग्रहों को भौतकि मंदरिों से भर दयिा; और यही सब तुमने धरती पर भी दोहराया; इसीलएि सब से पहले तुम्हारा नर्णिय होगा; नयिमों और सद्धिांतों का उल्लंघन करने

पर तुम भी उतने ही ईसा वरिोधी बनते हो; और हर वो व्यक्ति जो आदेशों का उल्लंघन करता है वो ईसा वरिोधी है; तुम कहते हो पवत्रि माता चर्च; मैं तुमसे कहता हूँ की इस दुनयिा में कोई भी संत पवत्रि नहीं है; असली वनिम्रता को ऐसी उपाधियों की ज़रूरत नहीं जो स्वर्ग के राज्य में न जानी जाए; तुम्हारा सूक्ष्म ग्रह भी इसमें शामलि है, केवल अनंत पति और कुछ पैगंबर ही पृथ्वी को जानते है; इसका कारण यह है की पति यहोवा के जीवति ब्रह्माण्ड का कोई अंत नहीं है; और जो कोई अपने आप को बड़ा समझता है वो बड़ा नहीं है; तुम्हारे लिए ही वेश्या शब्द लखि गया था; क्यों कि तुम मेरे दव्यि नयिमों को गंदा करते हो, एक अँधा अन्य अंधों का नेतृत्व करता है; जो तुम्हारी ग़लतयिों को दूसरे अन्धो तक पोंहचाता है; जब नए सद्धिांत का फैलाव

होगा तब तुम्हारी आध्यात्मकि स्वार्थ की शीला वभिाजति होगी; शीला शब्द कसिी भी वस्तु के अनंत होने का प्रतीक नहीं है; पृथ्वी सापेक्ष है अनंत नहीं; तुम सोचते हो की तुम्हारा चर्च अनंत है; भवष्यि में होने वाली घटनाएँ तुम्हें इस भ्रम से बहार लाईगी ; केवल वे लोग अमर हुए हैं जो दलि-से वनिम्र थे; वे नहीं जो अनैतकिता में नहिति नैतकिता का पाठ पढ़ते हों; पृथ्वी के अतीत में जब मेरे प्रथम पुत्र ने कहा था; इस शीला के ऊपर मैं मेरा चर्च बनाऊंगा; तो उसने इंसानयित का भवष्यि देखते हुए ऐसा कहा था; चूंकि सौर ट्रनिटिी सर्वत्र है; वह तीनों काल में है: भूत वर्तमान एवं भवष्यि; और उन्होंने क्या देखा? उन्होंने तुम्हारे सारे उल्लंघन देखे; उन्होंने देखा कसि तरह तुमने मासूम जीवों को सताया; इसलएि की वे तुम्हारी वचिारधारा

से अलग सोचते थे; उन्होंने देखा कसि तरह तुमने महान वद्विानों और लेखकों को सताया; केवल इसलएि की उन्होंने तुम्हें तुम्हारी भूल दखिाई; उन्होंने देखा कसि तरह तुमने राजाओं को ताज पहनाये; यह जानते हुए की अनंत परमात्मा ही राजाओं के राजा हैं; वे जो जीवन देते भी है और लेते भी हैं; राजा की उपाधि सेलेस्टयिल दुनयिा की है; शैतान को आत्मा का राजा कहा जाता है; दैवी आदेश राजा बनने की शक्षिा नहीं देते; वो यह शक्षिा देते हैं के नम्रता सर्वोपरि है; उन्होंने देखा कसि तरह तुमने उन शस्त्रों को आशीर्वाद दएि जसिसे अनंत पता के बच्चों ने एक दूसरे को मार दयिा; शैतानों, यह जानते हुए की देवी आदेश कहता है: धाऊ शेल्ट नोट कलि; (तुम्हें कसिको मारना नहीं चाहएि); उन्होंने आस्था का धंधा होते देखा; और उन्होंने तुम्हारी आत्मा में हर

अनैतकिता को देखा; उल्लंघन करने से अच्छा होता की तुमने वापस जन्म लेने का नविदन न कयिा होता; हर नैतकिता जो पति के पुत्रों की आस्था को वभिाजति करे और तुम्हारा धर्म, दोनों स्वर्ग के राज्य में नहीं जाने जाते; राज्य में जाना जाने वाला एकमात्र मंदरि है कर्म का मंदरि; कर्म ही प्राचीनतम अधदिेश है; तुम्हारे सूक्ष्म ग्रह के जन्म से पहले, प्रचंड दुनयिाओं में कर्म था और है; कर्म का मंदरि कभी मट्टिी में नहीं मलिता; तुम्हारे भौतकि मंदरि मट्टिी के ढेर में मलि जाते हैं; और उसी के साथ भौतकि श्रद्धा भी इस ग्रह से मटि जाती हैं; एक ऐसी श्रद्धा जो कभी सखिाए नहीं जानी चाहएि थी; ऐसी श्रद्धा जो पाखंड से रूप लेती है; जसिके कारण तुमने दुनयिा की उन्नति को उसके नैतकि एवं आध्यात्मकि सतह पर बीस सदयिों में ही वलिंबति कर दयिा है.-

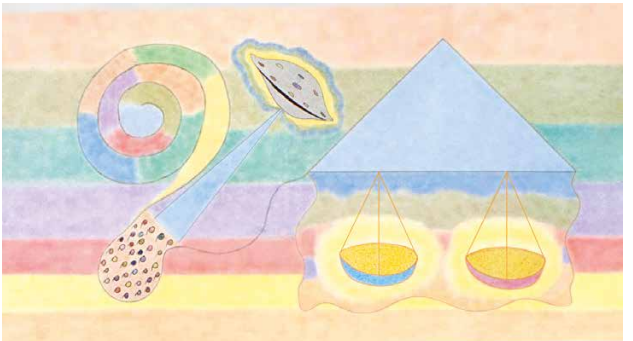

हाँ मेरे बेटे; यह दवि्य तस्वीर यह दर्शाती है की हर न्याय उसी तरह होता है जसि तरह जीवों का प्रजनन; सभी मानवीय आत्माओं ने स्वर्ग के राज्य में इस न्याय को देखा; क्यों की सभी को अपना न्याय देखने दयिा गया; स्वर्ग के राज्य में सब है; जहाँ तक आध्यात्म की बात है, इस जगत में कोई अँधा नहीं पैदा होता; तुम्हारी करतूतों के आधार पर न्याय होता है; क्यों की हर कसिी ने अपने आप का स्वर्ग बनाने का वादा कयिा था; मौजूदा आदेशों में न्याय का कानून है; और वह

वही दंड है जसिसे तुम्हारा मुल्यांकन कयिा जाएगा; तुम्हारे हर वचिार का एक इरादा है; और राज्य में हर इरादा भौतकि और जीवति बन जाता है; इरादे का मुल्यांकन तब होता है जब आत्मा उसका उल्लंघन करती है; मानव शरीर चुम्बकीय नयिमों का परणिाम है; जो ब्रह्माण्ड से बनाया गया है, और जसिने दव्यि नयिमों को बनाया है; जो कोई दैवी होने से इनकार करता है, वो पतिा को नकारता है; जन्हिें अपनी औलादों के लएि बेहतरीन चाहएि; और जो कोई पतिा को नकारता है, वह अपने आप के अमरत्व को नकारता है; क्यों के अपरंपार स्वर्ग में वह उनका मन पढ़ते है; और जब वो दैवी जीव, आत्माओं को पढ़ते है, तो वे ऐसा न्याय से करते है; जो भी पतिा को नकारता है, स्वर्ग में उन सभी का प्रवेश नकारा जाता है; तुम जो कुछ धरती पर करते

हो उसके प्रत्याघात ऊपर होते है; और जहाँ कहीं तुम्हारी आत्मा जाती है, नियिम हर उस जगह वही रहते है; मेरे आदेश नीचे और ऊपर, समान है; बदलता है तो तत्व ज्ञान जो सर्फि कुछ समय तक जीवति रहता है; तुम्हारा न्याय आध्यात्मकि है और होना ही चाहएि; जो भौतकि है वह तुम्हारे शरीर की मट्टिी में नहीं रहता; तुम्हारे ज्ञान में; हर आत्मा का सत्य है की वह अमर है; वह अल्पकालकि नहीं है जैसा वह सोचती थी जब वह शरीर में थी; माँस का शरीर जसिके लएि नविदन कयिा गया था; और वह उसे दे दयिा गया था; शरीर प्रदान करने जैसा और कुछ नहीं है; शरीर जीवति है जसिने कुछ समय के लएि भौतकि भूमतिि का नविदन कयिा था; और वह प्रदान कयिा गया था; वंशानुक्रम सब के लएि समान है; आत्मा और द्रव्य को समान अधकिार हैं; दोनों

नविेदन करते है; आध्यात्मकि और भौतकि नयिम संवलिीन है; जसिे स्वर्ग में आर्क ऑफ़ कोवेननटस कहा जाता है; क्योंकि आत्मा का भौतकिी करण अनयिमति रूप से नहीं बल्कि ज़म्मिेदारी से कयिा जाता है; इससे वपिरीत कहना अपने आपसे नफरत करने जैसा है; और जो खुद से नफरत करता है वह पति से भी नफरत कर रहा है; जो की उसी में पाए जाते हैं; क्या तुम्हे यह नहीं सखिाया गया की तुम्हारे बनाने वाला सर्वत्र है? चाहे वह कल्पनीय हो या अकल्पनीय? वास्तव में यह तुम सर्फि मौखकि रूप से जानते हो अपने ज्ञान से नहीं; खुद के प्रयास से; तुम्हारे चेहरे के पसीने में; खुद के बलबूते पर; जसिे चाहए उसे मलिेगा; क्युके उसे उतना ही मलिेगा जतिना उसने खोज में समर्पण कयिा हो; क्युके तुम बोहोत सी चीज़ों की खोज कर

सकते हो; और अगर तुम पिता की खोज नहीं करते, जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया, तो तुम स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते; एहसान फरामोश कभी प्रवेश नहीं कर पाए; केवल विनम्र; जो अपने आप के न्याय से वाक़िफ़ है; क्योंकि उस निर्णय का निवेदन उन विनाम्रों ने खुद स्वर्ग में किया था; हर निर्णय जिससे हर कोई अपने जीवनकाल में हर पल गुजरता है, हर सेकंड, सब का निवेदन किया गया और वह प्रदान किया गया; तुम्हारी मृत्यु का तरीका और विशिषता का निवेदन भी तुम्हींने किया है; और तुम्हारे न्याय में तुमने सर्वोपरि नैतिकता की पूर्ति का निवेदन किया; एकमात्र; क्यों की उसके बिना तुम कभी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते; और तुमने यह निवेदन किया की ऐसी नैतिकता पृथ्वी पर सिखाए जाए; और तब दैवी आदेश तुम्हें दिए

गए; वे दंड हैं; उन्ही के आधार पर तुम्हारा न्याय होगा; और ऐसा इस ग्रह की समाप्ति तक होता रहेगा; मानव आत्माए मेरा अध्ययन नहीं करेंगी; लेकनि, मेरे आदेशों की नैतकिता में न रहना अंधकार है; क्योंकि जहाँ पति है वहां तुम नहीं जा पाओगे; वह समय जब तुम ज्योति से दूर होंगे, इतना अभूतपूर्व होगा की तुम्हें अंकों को पढ़ने हेतु पुनः जन्म लेना होगा; जो की तुम्हारे सूक्ष्म उत्क्रांतविाद में नहीं है; जसि न्याय का नविेदन तुमने कयिा है उसकी शुरुवात सब से सूक्ष्म चीज़ जो तुम महसूस कर सकते हो वहां से होती है; इसलएि, सूक्ष्मतम, वनिम्र, सभी चीज़ों में आगे है; स्वर्ग में आगे और दैवी न्याय में भी; और दैवी पति यहोवा के सामने भी; और सूक्ष्मतम चीज़ जो तुम्हारा मन कल्पना कर सकता है; वह है तुम्हारे वचिार; वही जो तुम हर रोज़

सोचते हो; वही जो तुमने स्वर्ग में निवेदित कियि थे; वही जो तुम महसूस करते हो पर देख नहीं सकते; तुम्हारे सभी विचार शारीरिक रूप से अंतरिक्ष में प्रवास करते है; उनके भी वही अधिकार हैं जो तुम्हारे हैं; तुमने पदार्थ में जन्म लेने का निवेदन दिया; उन्होंने भी वही किया; तुमने समय और अंतरिक्ष में रहने का निवेदन किया; तुम्हारे विचारों ने भी वैसा ही किया; ऊपर वही है जो नीचे है; निवेदनों का वंशानुक्रम सभी में सामान है; विशाल जीव भी निवेदन करते हैं और सूक्ष्म जीव भी; जीविति और निर्जीव निवेदन करते हैं; और पिता सबकुछ प्रदान करते है; क्यों की वे अनंत हैं; तुम्हारे विचार अंतरिक्ष का प्रवास करते हैं, अभूतपूर्व दूरियाँ; दूरियाँ जिसका तुम अनुमान नहीं लगा सकते; सिर्फ पिता जानते हैं; तुम्हारे विचार स्वर्ग में जाने जाते हैं, गांगेय बीज की

तरह; उन्ही से तुम्हारी दुनिया जन्म लेती है, तुम्हारे अपने स्वर्ग से; मेरी स्वतंत्र इच्छा में यह लिखा गया था: हर कोई अपना स्वर्ग खुद बनाता है ; क्यों के तुम सभी में सूक्ष्म रूप में पिता का अंश है; जो कुछ पिता के पास है, वह बच्चों के पास भी है; ठीक उसी तरह जैसे पृथ्वी लोक के माता-पिता के साथ होता है; उनकी अनुवांशिक विशेषताएँ उनकी संतति में आती है; जो ऊपर है वही नीचे है; जो विरासत पिता ने तुम्हें दी, वह मासूमियत से भरी थी और तत्व ज्ञान से खाली; क्योंकि तुम्हारी मर्ज़ी है क्या चुनना है; और जो तुम हो वह तुम्हारी वजह से हो; क्योंकि सबकुछ अपने चेहरे के पसीने में ही है; आध्यात्मिक प्रयासों से पिता की निर्मिति में ऐसा कुछ नहीं जिसकी कोई कीमत न हो; सबकी कीमत है और होगी; आध्यात्मिक योग्यता के बिना

कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता; इसलिए तुम्हारी दुनिया की सुविधाओं की स्वर्ग में कोई कीमत नहीं; हर सुविधा जिसका तुमने आनंद लिया वह वहीँ समाप्त हो चुकी ; और इसी वजह से यह लिखा गया है: और उन्हें अपना इनाम मिल गया; सभी भौतिक सुखों की स्वर्ग में कोई योग्यता नहीं है; और कम से कम वह सारे सुख जो की तत्व-ज्ञान की उपज हैं जिन्होंने पिता के आदेशों का पालन न किया; ऐसे तत्व ज्ञान के दिन गिने हुए है; क्योंकि निर्भिमाता देते है और छीनते भी हैं; तुम्हारा भौतिक तत्व ज्ञान चूर चूर हो जायेगा; क्योंकि हर चीज़ का अपना वक्त होता है; क्योंकि सबकुछ पिता के आदेशों पे निर्भिर है; ऐसी निर्भिरता जो तुमने खुद अपने न्याय में निवेदित की थी; तुम्हारे अपने जीवन का पतन तुम्हारे वास्तव का पतन है; विनिम्रों

शोषतिों और पीड़तिों के लएि यह सब से महान घटना होगी; क्योंकि ईश्वर के समक्ष सब सामान है; कोई पैदाईशी गरीब या अमीर नहीं; ऐसी परस्थितियिां महत्वाकांक्षी आत्माओं ने खडी की थीं; वे जो केवल अपने वर्तमान में जीते हैं; सबसे पछिड़ी आत्माएं; ऐसी अल्पका-लकि सोच रखने वालों ने केवल दुनयिा को ग़ुलाम बनाया; ऐसे सारे राक्षसों का न्याय दुनयिा खुद करेगी; क्यों की कसिी को अपनी आत्मा का वरिोध नहीं करना; धी लेम्ब ऑफ़ गॉड के सद्धिांत की रोशनी दुनयिा को बदल देगी; क्यों की ऐसा स्वर्ग में लखिा है; पृथ्वी लोक को जैसा कहा गया था उससे वपिरीत कयिा है; सदयिों से यह बात मेरे दैवी आदेश कहते आये हैं; जो नम्र है वो पहले है; हर चीज़ में; और तुमने दैवी आदेश का क्या कयिा? क्या मेरे वनिम्र दुनयिा पर नयिंत्रण

करते हैं, क्योंकि वे सभी में उन्नत है? वास्तव में नहीं; क्योंकि मैं देख रहा हूँ जो वनिम्र है वह शोषति है; वे उसका भाग नहीं बन सकते जसिे तुम अगला समाज कहते हो; और कसिने तुम्हें अधकिार दयिा ऐसा समाज बनाने के लएि? क्या मेरे शास्त्रों में ऐसा लखिा है? वास्तव में तुम राक्षसो को मैं कहता हूँ की हर वो तत्व ज्ञान का पेड़ जो नरि्माता ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ दयिा जाएगा; ऐसे ही हर उत्क्रांतविाद में हुआ है; और कसिने तुम्हें बनाया और राजा बनाया, क्या तुम नहीं जानते पति ही राजाओं के राजा हैं? और राजा की उपाधि इस दुनयिा से नहीं; वह स्वर्ग से आती है; शैतान को आत्माओं का राजा कहा जाता है; दैवी आदेश सखिाते हैं वनिम्रता सर्वोपरी है; वह अपने आप को राजा बनाना नहीं सखिाते; मैं तुम शासति अभजिीत वर्ग के राक्षसों से

ख़ास कहता हूँ; की तुम में से कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं पायेगा; और तुम्हारे सहति तीन पीढ़ियों तक की तुम्हारी संताने भी; क्यों की पति यहोवा के ब्रह्माण्ड में हर वरिसत प्रेरति की जाती है; कोई भी व्यर्थ नहीं होना चाहिए था, समय का सूक्ष्म पल भी नहीं; क्यों की केवल एक पल या उससे भी कम का उल्लंघन तुम्हें स्वर्ग में प्रवेश से रोक देगा; दुनिया के शासति राजाओं, तुम्हारी संतति की मासूमियत तुम्हें श्राप देंगी; क्यों की तुम्हारी वजह से वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाएंगे; और उनके साथ हर वो व्यक्ति जिसिने तुम्हारी शासति तत्व ज्ञान में तुम्हारी सेवा की; एक भी शैतान जिसे अभिजीत कहा जाता है स्वर्ग में प्रवेश नहीं पायेगा; क्यों के स्वर्ग में केवल कर्म की योग्यता को मान्यता है; ब्रह्माण्ड का तत्व ज्ञान; वह जिसका अनुरोध हर

वनिम्र और ईमानदार जीव ने कयिा; जो धरती पर राजा थे ओर हैं, वे मोह में बंदी घमंडी आत्माएं हैं; उनकी आत्माओ में अन्य अस्तत्विों का गांगेय प्रभाव है; ऐसे अस्तत्विव जहाँ सबकुछ भौतकि है बौधकि कुछ भी नहीं; जीवन का नमक समुचति अंधकार; और ऐसा कोई शैतान नहीं जो कसिी न कसिी दुनयिा का राजा रहा हो; यह तत्व ज्ञान शैतान खुद बनाता है; उसी पल से जब उसने वद्रिोह शुरू कयिा; और वो सारा लश्कर जसिने उसके साथ वद्रिोह कयिा; सभी मानव आत्माएं जन्हिोंने समुदाय बनाने का अनुरोध कयिा; ऐसा देश जसिका नेता एक राजा हो; वो राक्षस के लश्कर का है; क्यों के तुम सभी स्वर्ग से आये हो; और राक्षस भी वहीँ से आये हैं; स्वर्ग में रहते समय, आत्माएं दूसरे जीवों की परंपरा अपनाती हैं; ठीक वैसे ही जैसे तुम लोगों

के बीच होता है; क्योंकि जो ऊपर है वैसा ही नीचे है; शैतान की नक़ल करनेवाले धार्मिक, अमीर, राजाओं, और शासित लोग जो ज़बरदस्ती तत्व ज्ञान बनाते है उन्ही में से हैं; लेकिन, कोई शैतान नहीं बचेगा; दैवी पिता का जीवित जगत सबकुछ शुद्ध कर देता है; सबकुछ बदल देता है; वैसे ही जैसे उन्होंने पुरानी दुनिया को धी मोसैक लॉ में बदल दिया; और तत्पश्चात धी क्रिस्चियन डोक्टराईन; अब वे धी डोक्टराईन ऑफ़ धी लेम्ब ऑफ़ गॉड से ऐसा करेंगे; और निर्माता के लिए इससे सरल और कुछ नहीं की वे माँस की दुनिया को जीवित दुनिया में बदल दें; वही दुनिया जो दैवी शक्तियों ने पहले कहा था: रोशनी रहने दो और रोशनी थी; वही दुनिया जिसने सारे पवित्र ग्रन्थ बना ये; वही दुनिया जिसने तुम्हें आदेश दिए; और वही दुनिया जो पहले तुम्हारा बौधिक

न्याय करती है, और फरि भौतकि क़ानूनों द्वारा; क्यों की हर आत्मा ने ऐसा अनुरोध कयिा था; उन्होंने अंतमि नर्णिय में ही अपना न्याय करने का अनुरोध कयिा; उन्होंने जीवन के हर पल में न्याय करने का अनुरोध कयिा था; शुरू करते हैं मेरे शास्त्रों को समझने की कठनिाइयों से; सबकुछ तुम्हारे अनुरोध से ही हुआ; यहाँ तक की धी लेम्ब ऑफ़ गॉड के वज्ञिान का शुक्ष्मातसिुक्ष्म ववरिण; इससे तुम्हें यह पता चलता है की जो तुम देख नहीं सकते वह भी स्वर्ग से नयिंत्रति होता है; उत्तेजनाएं जो तुम नहीं जानते; न्याय तुम्हारी सोच के लएि है; तुम्हारे वचािर; तुम्हारे लक्ष; तुमने स्वयं स्वर्ग में इसका नविदेन कयिा था; और तुमने तुम्हारे मूल के वस्मिरण का भी नविदेन कयिा; तुम्हारे नर्मिाण का तरीका और ववरिण; लेकनि, तुम्हे सब पता होना चाहएि;

क्योंकि तुमने यह माँगा की तुम धी लेम्ब ऑफ़ गॉड की रोशनी को धरती पर जान सको; तुमने ज्ञान पाने की सांत्वना दी; तुमने एक नए सद्धिांत का नविदन कयिा; और तुमने माँगा की यह सद्धिांत अप्रत्याशति रूप से आए; धी डोक्टराईन ऑफ़ धी लेम्ब ऑफ़ गॉड का सद्धिांत; इसकी जानकारी बोहोत पहले ही हो जानी चाहएि थी; धार्मकि शीला के अवश्विास और भौतकिता ने तुमसे सच छपिाए रखा; उनके पास धी लेम्ब की सूचयिाँ हैं; पहली सूचयिाँ उनके हाथ में दी गई थी; क्योंकि उनका न्याय हो चुका था; हर आत्मा का न्याय होता है; यह शैतान ऐसी आस्था सखिाते है जसिमे वे खुद यकीन नहीं करते; उन्होंने यह नविदन कयिा की सत्य का ज्ञान पहले उन्हें प्राप्त हो; और उन्हें वह दयिा गया; उन्होंने सत्य को इसलएि छुपाया क्यों की उनके हृदयों

में स्वार्थ पैदा हो गया; वे सबसे कम वशि्वास करते हैं; वे भौतकि लालचो से प्रभावति हैं; एक राज वरिासत; जसिसे व्यक्तकिी पद्दो-न्नती होती है; वास्तव में मैं तुम श्रद्धा के लालची राक्षसों से कहता हूँ की मेरी दुनयिा का एक भी झूठा व्यक्तस्विर्ग में नहीं जाएगा; एक भी स्वार्थी पत्थर नहीं जा पायेगा; तुम को यह पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियाँ शापति करार देंगी; तुम शैतानों की वजह से इंसान स्वर्ग में नहीं जा पायेगा; क्योंकहिर बीता पल उल्लंघन में जीना था; क्यों की केवल एक पल या उससे भी कम का उल्लंघन तुम्हें स्वर्ग में प्रवेश से रोक देगा; और जब तुमने दुनयिा से सत्य छुपाए रखा, तुम इंसानयित को स्वर्ग से और दूर ले गए; क्योंकतिुमने ग़लतयिों को और बढ़ावा दयिा, गलती में रहने का समय कई ज़्यादा है; उल्लंघन का हर पल

स्वर्ग का दरवाज़ा बंद कर देता है; तुम सभी को ऐसे पलों को जोड़कर मनिट, घंटे, सप्ताह, साल और जतिने साल तुम जएि सब को गुनकर गनिने हैं; जब से तुम बारह साल के हुए तब से गनिने है; उस उम्र के पहले; हर आत्मा ईश्वर के सामने मासूम है; और जसि कसिी ने एक पल या उससे भी कम समय तक मेरे कसिी भी मासूम को सताया है वो स्वर्ग में नहीं आ पाएगा; क्युकी दूसरी योनयिों में जब वे मासूम थे तो उन्होंने शकियतें कीं थी जब उन्हें सताया था; इसलएि यह लखिा गया: दूसरों के साथ ऐसा मत करो जो तुम अपने साथ नहीं होने देना चाहते; इसी वजह से ऐसे माँ बाप, सौतेले माँ बाप या कोई और जो बच्चों का प्रभारी हो जो बुरा है, वो स्वर्ग में नही आ सकता; उनका भवष्यि मेरे नर्दिोषों के न्याय से होगा; क्यों के हर छोटा स्वर्ग में

बड़ा है; क्या तुम्हें यह नहीं सिखाया गया की जो नम्र है पिता के सामने वही पहला है? इसका मतलब की हर सूक्ष्म चीज़ पिता जेहोवा के न्याय में अव्वल है; इसी कारण से तुम्हारी आत्मा स्वर्ग में अव्वल नहीं है; पहले वे है जन्हिें धरती पर नफरत की गई; तुम्हारी आत्माएं पहले होने की मांग नहीं कर सकती; क्योंकि तुम्हें सब से ज़्यादा विनिम्र होने को कहा गया था; जो अंतमि होता है वो हमेशा नम्र होता है; उसे दी गई अहमयित की परवाह नहीं होती, वास्तव मे मैं तुमसे कहता हूँ की जसिने अपने आप को अहमयित दी वह स्वर्ग में नहीं आ सकता; चाहै वह एक पल या उससे कम भी क्यों न हो; इस इंसानयित का पतन झूठे सांसारकि संकल्पना की वजह से है, जो तुम मे धार्मकि शीला की झूठी नैतकिता द्वारा डाला गया था; इस वेश्या ने जो सदयिों तक

आस्था का व्यापार करती रही, खुद के तत्काल लाभ के लिए सब अपने हिसाब से किया; उसने विनाम्रो के बारे में नहीं सोचा; विनम्र अपने आप को विलासिता से नहीं घेरे रखता; वह अपने आप को झूठा साबित नहीं करता; क्यों के हर विनम्र व्यक्ति उससे गुज़र चुका है जिसिसे बदनामी चाहने वाले गुज़र रहे हैं; हर भौतिकितावादी पिछड़ी आत्मा है; जो सूक्ष्म उपस्थितियों के प्रति आकांक्षा रखता है; उससे अधिक, वे आत्मा के क़ानूनों को नज़रअंदाज़ करते हैं; ऐसा चरित्र होता है तथाकथित पाद्रिओं का; वेश्याओं के मुखिया; इन्हें स्वर्ग में जाना जाता है; क्यों के इनमेसे किसी ने प्रवेश नहीं किया; केवल विनम्र और सविनय प्रवेश पाते हैं; और हर धर्म भी अज्ञात है; और तुम्हारी धरती भी; ऐसा अनंत नियमों की वजह से है; उनमे से एक है की ब्रह्माण्ड

अनंत है; इतना अनंत की हर सपना सच हो जाए; दूसरा नयिम है की हर एक अपना स्वर्ग खुद बनाता है; और इस तरह तथाकथति पादरयिों और उनके अनुयायी, जनि्होंने भौतकि श्रद्धा के तत्व ज्ञान को संजोये, अपने ऐसे तत्व ज्ञान से अपनी दुनयिा बनायीं; क्योंकि हर दुनयिा एक स्वर्ग से घरिी है; और हर कोई अपना स्वर्ग खुद बनाता है; भौतकि जगत दैवी पतिा ने बोया हुआ वृक्ष नहीं है; और वह स्वर्ग में नहीं जाना जाता; और इसी तरह हर सद्धिांत या वज्ञिान या पंथ जसिने मेरे वनिाम्रों को महत्व नहीं दयिा; क्यों की मैं वास्तव में कहता हूँ की इस ग्रह को वनिाम्रो द्वारा शासति होना चाहएि था; क्योंकि वे स्वर्ग में अव्वल हैं; वे ऊपर पहले है और नीचे भी पहले होने चाहएि; और सब उल्टा कयिा गया है; यह दुनयिा उनसे शासति की जा रही है

जन्हिोंने स्वर्ग मे शासन की मांग नहीं की; अंधकार की आत्माएं तुम पर शासन करती हैं; क्यों की उनके पद पर वे रोशनी के नाम पर ऐसा नहीं कर रहे; वे अपने सम्भाषण मे मेरा उल्लेख नहीं करते; उनका ध्येय नर्िमाता नहीं हैं; उनका ध्येय उसपे है जो अल्पकालकि है; वह जो अनंतता के सामने केवल क्षण भर के लएि है; मैं उनका मन पढ़ता हूँ; मैं उनके गणति देखता हूँ; क्यों की मैं सर्वत्र हूँ; मैं देखता हु की वे खुद अपने अंधकार की दुनयिा बनाते हैं; मैं वास्तव में तुम घमंडी और व्यर्थ नेताओं से और जसि कसिनि मेरे आदेशों को ध्यान मे नहीं लयिा उन सबसे कहता हूँ की तुममेसे कोई नहीं बचेगा; यदि शुरू से वनिम्रो ने शासन कयिा होता तो न्याय की जरुरत ही न होती; उल्लंघन कर्ता ही क़यामत बनाते हैं; एक भी उल्लंघन कर्ता पति के राज्य में नहीं

जा पायेगा; कानून स्वयं तुम मे है; ऐसा हमेशा से ही है; तुम को केवल सोचना है; और तुम तुम्हारा न्याय बना रहे हो; वस्तु और आत्मा अपने आप के नयिमों में सोचते हैं; क्यों के कोई भी बनि आनुवंशकि नहीं है; सबको सामान अधकिार हैं; पतिा के समक्ष कोई कमतर नहीं है; यह अधकिार हर कल्पनीय रूप में व्यक्त होते हैं; क्यों के ग्रहों में नविास से पहले, भवष्यि की प्रकृतकि े तत्वों के साथ परस्पर संवाद पहले से हो चुका है; और हर चीज़ जो तुम्हारे अस्तत्वि के दरमयिान तुम्हारी आँखों ने देखा है उसका अनुरोध तुम्हनि े उन दव्यि संवादों में कयिा था; इसीलएि पतिा यहोवा के जीवति ब्रह्माण्ड में वस्तु एवं आत्मा को न्याय मांगने का अधकिार है; वस्तु और आत्मा की मुक्त इच्छा है; जो परस्पर स्वतंत्र है; अगर ऐसा न होता तो न्याय में

पूर्णता न होती; सभी के अधिकारों में समानता न होती; पिता का न्याय सर्फि एक है, किंतु अनगनित रूपों में व्यक्त किया जाता है; क्यों के उनमें कुछ सीमित नहीं है; हर न्याय सृजन के कृतियों से ही जन्म लेता है; वह जीवन का नमक है, जो अपने न्याय को रूप देता है; जीवन का नमक वही ज्ञान है जो तुम एक अस्तित्व में पते हो; उसकी स्वतंत्र इच्छा को ध्यान में लेते हुए; आत्माएं ज्ञान पाने की दौड़ में समान गति से आगे नहीं बढ़ती; कुछ पहले होती हैं और फिर शेष; यह नियम तुम लोगों में शारीरिक असमानता दर्शाता है; हर ज्ञान यानि जीवन का नमक तुम मे अवरित बनता है; लेकिन अनंत मात्रा में सबकुछ सापेक्ष है; तुम स्वयं तुम्हारे जीवित संबंधियों के गुण और गुणवत्ता बनाते हो; गुण तुम्हारी सोच के तत्व ज्ञान से दिए जाते हैं, और

गुणवत्ता स्वर्ग में तुम्हारे आध्यात्मकि पद क्रम से; सर्वोत्तम गुणवत्ता वनिम्रता से प्राप्त की जाती है; तत्पश्चात आनंद और कर्म से; ईश्वर के राज्य के दव्यि साम्यवाद को नहिारो; एक बच्चे के तत्व ज्ञान से दव्यि साम्यवाद; वो जसिने अपनी जदिगी में आनंद नहीं कयिा, स्वर्ग में नहीं जाता; एक भी मुखर चरत्रि वाला नहीं जाएगा; यद्यपि वह मुखरता एक पल या उससे कम समय के लएि भी क्यों न रही हो; स्वर्ग में तुम सभी ने आनंदमयी रहने का वादा कयिा था; स्वर्ग की ही नक़ल करते हुए; तुमने हर परस्थितियिों में आनंदमयी रहने का वादा कयिा था; तुमने मूर्खतापूर्ण चरत्रि की मांग नहीं की थी; क्योंकि तुम जानते थे की स्वर्ग में उसे नहीं जाना जाता; और तुम जानते थे की मूर्खतापूर्ण होते हुए तुम स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते; अगर

तुम्हारे अस्तत्िवों में तुम बार बार गुस्सा हुए, तो इसकी वजह अनुचति जीवन पद्धतति है जसिे मनुष्यों ने चुना; और ऐसी पद्धतयिाँ नर्िमाण करने वालों को न्याय में भुगतान करना होगा; क्यों के उन्होंने ऐसा अनुरोध कयिा था; और इसीलए उन्हें ऐसा प्रदान कयिा जायेगा; ऐसे शैतान जन्िहोंने शोषक पूंजीवाद का नर्िमाण कयिा, उनपर दैवी न्याय का पूरा बोझ गरिेगा; महत्वाकांक्षा और प्रबलता के इन शैतानों ने अनंत पति को वादा कयिा था की वे उनके दव्यि नयिम का महमिा बनाएँगे; नहीं के वे तानाशाह बने; क्योंक यिह जीवन शैली जसिका परणिाम अच्छाई और सुवधिा का वज्ञिान है, गुलामी का चन्िह है; ऐसी गुलामी जो अपने अंत तक पोहोंच रही है; क्यों के नए काल के प्रारंभ का समय आ चुका है; नए वक्त के साथ नयी दुनयिा; नयी नैतकिता के साथ नयी

नयिति; क्या तुम्हें यह नहीं सखािया गया था की नर्िमाता सबकुछ नवीकरण करते हैं? धी लेम्ब ऑफ़ गॉड के सद्धिांत से अंतमि नर्िणय शुरू हो चुका है; एक दर्दनाक अंत; क्योंकि पिता के नयिम के हर उल्लंघन से पीड़ा ही होती है; जैसे तुमने अपने जीवन में अन्याय अनुभव कयिा है; अन्याय जसिने ऐसी जीवन शैली से जन्म लयिा जसिे दैवी पिता ने नर्िमति नहीं कयिा था और जो स्वर्ग में नही जाना जाता.-

लेखन

अल्फ़ा और ओमेगा.-

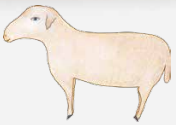

क्या आ रहा है.-

क्या आ रहा है, वो हर एक पर नर्भिर है; क्युके वो लखिा गया है, की हर एक का नर्णिय उनके कामों से होगा; ईश्वर के दैवी नर्णिय में उम्र के बारह साल से लेकर सभी वचिार शामलि हैं; क्यों के केवल बच्चों को दैवी नर्णिय का सामना नहीं करना पड़ता; ईश्वर का दैवी नर्णिय तथाकथति वयस्कों के परीक्षति जीवन में चन्तिाकारक है; जो एक पल के लएि सोचा गया था वह अस्तत्वि के समान होगा; वह जसि तरीके से सोचा गया था, वह एक रोशनी अधग्रिहति हो सकता है या फरि एक रोशनी खोया हुआ; ऐसा उन चीजों के लएि है जो ईश्वर की हैं, असीम हैं; अनंत पति सूक्ष्म मानसकि प्रयास के लएि पूरा का पूरा अस्तत्वि प्रदान करते हैं.-

अल्फ़ा और ओमेगा.-

दीर्घ प्रतीक्षति रहस्योद्घाटन की शुरुवात कैसे हुई?

दैवी पिता के दूत होने के नाते सन १९७५ और १९७८ के बीच, रहस्योद्घाटन की शुरुवात में होने वाले उनके अनुभव और सनातन से मिलने वाले दुर्संवेदंशील आदेशों के बारे में उन्होंने

बताया. देव दूत अल्फ़ा और ओमेगा की लीमा में हुई बातों की कैसेट रकिार्डगि का अनुवाद नमि्न प्रकार से है.

-अल्फ़ा और ओमेगा: देखो मैं आम इंसान था; मैं हमेशा से आम ही रहा; केवल यहाँ मैं आदेशों का पालन करता हूँ; पति ने मुझसे एक बार कहा, उन्होंने मुझसे नोट पैड पर कुछ लखिने को कहा जो मेरे पास अभी भी है; उन्होंने मुझे एक संदेश दयिा, उन्होंने लखिवाया; वह लेखन मुझे याद है: बेटा चुनो, क्या तुम ईश्वर की सेवा करना चाहते हो या फरि तुम्हारा सांसारकि जीवन यूँ ही गुज़ारना चाहते हो?; तुम्हें चुनना होगा, क्यों की तुमने अपने जीवन में स्वतंत्र इच्छा की मांग की थी, जैसा सब करते है; उन्होंने सोचने के लएि मुझे तीन मनिट दएि; इस बात को ध्यान में रखें की उन्होंने मुझे चुनाव करने का पर्याय दयिा; फरि मैंने उनसे

कहा..... मैं उनसे दूरसंवेदनता से उत्तर देने जा रहा था- नहीं पुत्र, लिखिति में, क्यों के तुमने लिखिति का अनुरोध कियि था; इश्वर को हर भावना का निविदन कियि जाता है, फरि मैंने उनसे कहा: पिता जेहोवा, मैं आपका अनुकरण करता हूँ, क्यों की जो मनुष्यों का है वह सनातन नहीं है, मैं उन्ही का अनुसरण करना पसंद करूँगा जो अनंत हैं.

- भाई: लेकिन, क्या उस वक्त तुम छोटे थे?

- अल्फ़ा और ओमेगा: हाँ.

- भाई: सात साल की उम्र में तुम यह सब जान गए?

- अल्फ़ा और ओमेगा: हाँ, हाँ; वह नोट पैड अभी भी मेरे साथ है और वह कागज़ पीला हो चुका है, मुझे उसे सूट केस में रख देना चाहिए था, वो वहां कहीं है; और फरि पिता ने मुझसे कहा: हाँ पुत्र, मुझे पता था, लेकिन तुम्हें

परीक्षा में खरा उतरना था; यद्यपि सनातन जानते हों, तुम्हें परीक्षा में खरा उतरना होता है; क्यों के अगर तुम खरे नहीं उतरते तो तुम्हें कोई अनुभव नहीं होता.

- बहन: लेकिन क्या उन्होंने ऐसे ही तुम्हें चुनकर अचंबित कर दिया; याने ऐसे ही अप्र-त्याशित रूप से उन्होंने तुम्हें चुना?

- अल्फ़ा और ओमेगा: हाँ मैं तुम्हें वही बताने जा रहा हूँ, हर अकल्पनीय घटना का अनुरोध ईश्वर से किया जाता है, जिस तरह लोग आविष्कार का अनुरोध करते हैं, ठीक वैसे ही मैंने प्रकाशित करने का अनुरोध किया, हर एक ने अपने अस्तित्व का अनुरोध ईश्वर से किया; जैसे जो धार्मिक है उसने केवल उपदेश देने का अनुरोध किया था विभाजन करने का नहीं; ना हीं शैतान की नक़ल करने का; ऐसा सुनने में ही कितना बेतुका लगेगा: पिता, मैं

जब दूर दुनयिा में जाऊँगा तो अपने भाइयों को वभिाजति करूँगा, सुनने में ही अनादर पूर्ण लगता है; नहीं?; जब तुम यह जानते हो की ईश्वर ही शुद्ध प्रेम ह.

अल्फ़ा और ओमेगा नयिमावली के शीर्षकों के बारे में कहते हैं: यह जान लें की कई ऐसे शीर्षक हैं जो कुछ ही समय में आने वाले है, पतिा कहते हैं, लगभग १०,००० शीर्षक नश्चिति रूप से; जैसे क्या आ रहा है? एक शीर्षक है, ऐसे १०, ००० नोटबुक में भेजे जा चुके हैं; नयिमावली का प्रथम हस्सिा नोटबुक में है; शुद्ध शीर्षकों से करोड़ों कतिाबें बनानी हैं जसिे क्या आ रहा है कहा जायेगा; सर्फि शीर्षक; फरि दुनयिा की सभी भाषाओं में अनुवाद कयिा जाएगा, ऐसा पतिा कहते हैं, क्यों के ईश्वर सर्वत्र हैं.

स्वर्गीय वज्ञिान, टेलपिाथकि इंजील है; और इसके प्रतीक भगवान की भेड़ का बच्चा है।

अल्फा और ओमेगा, भारी टेलपिाथकि इंजील के लेखक हैं। उन्होंने कहा कि चिलि और पेरू में 1978 के वर्ष तक 4.000 स्क्रॉल ऊपर लखिा है।

इस दव्यि रहस्योद्घाटन रोल और मेमने (अध्याय 5) के रूप में रहस्योद्घाटन की पुस्तक में पहले से ही बताया जाता है। इस खगोलीय वज्ञिान, सब बातों का मूल बताते हैं और घोषणा की क्या आ रहा है।

धी लेम्ब की नयिमावली (पांचवा रहस्योद्घाटन)

सेलेस्टयिल साइन्स

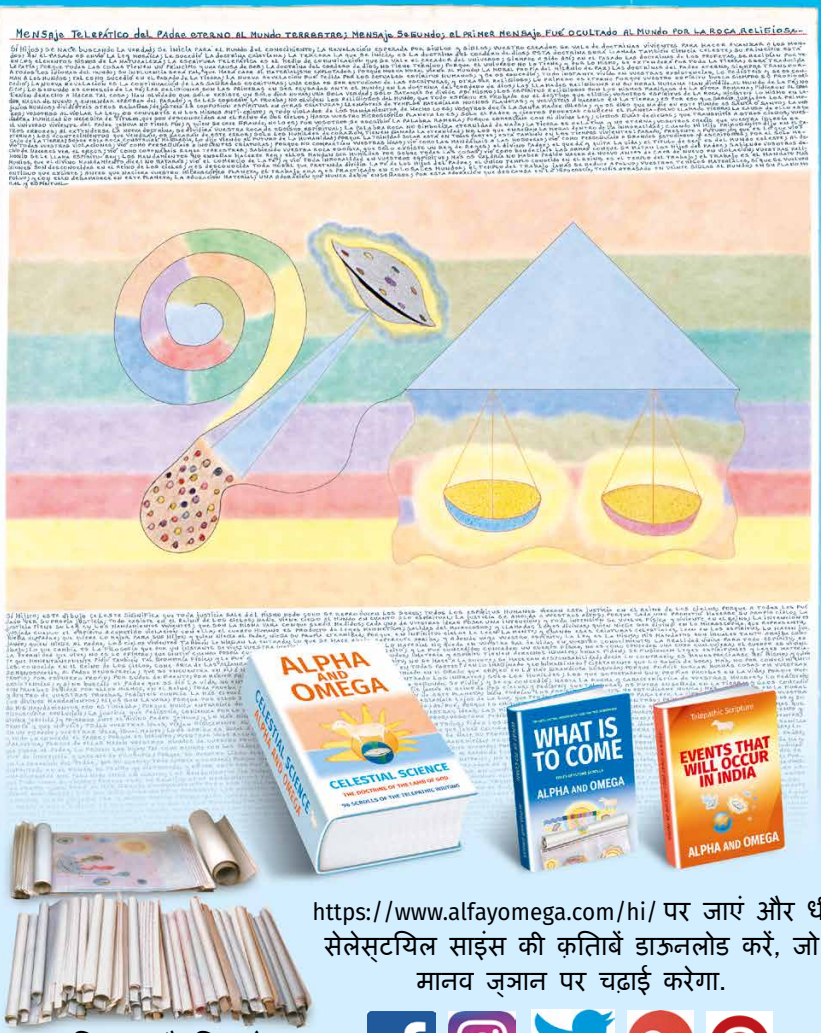

https://www.alfayomega.com/hi/ पर जाएं और धी सेलेस्टयिल साइंस की क़ितिबें डाऊनलोड करें, जो मानव ज्ञान पर चढ़ाई करेगा.

वज्ञिान, नैतकिताएं, मनोवज्ञिान और दैवी नरि्णय.

https://www.facebook.com/RevelacionAlfayOmega/